यज्ञ विज्ञान

ऋग्वेद

यजुर्वेद

यज्ञ मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, चेतना, गति व प्रकृति में संतुलन बनाने की दैवीय विद्या है

अभ्युदय एवं निःश्रेयस का साधन

पञ्चतत्व की शुद्धि

शुभ संस्कारों का आधान

उत्तम स्वास्थ

रोगजनक बैक्टीरिया वायरस, फंगस से बचाव

हानिकारक गैसें- SOx NOx आदि से बचाव

सूर्य की रश्मियों का शोधन

रेडिएशन का दूर होना

स्वाहा है जिसकी आत्मा,
इदं न मम है जिसका प्राण।
ऐसे दिव्य वचनों से,
बढ़ती है यज्ञ की शान।।

उत्तम चिकित्सा पद्धति

उत्तम कृषि का आधार

जलवायु परिवर्तन ग्लोबल वार्मिंग का समाधान

सूक्ष्म ऊर्जा संवर्धन

वर्षा जल की शुद्धि एवं भूगर्भ जल की वृद्धि

सामवेद

अथर्ववेद

यज्ञ की यह शुद्ध हवा। सब रोगों की है दवा।।